सिनेमाहौल

फ़िल्म ईजिन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

सूर्यन मौर्या

दिनेश श्रीनेत

संजीव चंदन

रश्मि रविजा

राकेश त्यागी

अविनाश दास

रवि शेखर

ईशान त्रिवेदी

डॉ. प्रकाश हिंदुस्तानी

आनंद भारती

रघुवेन्द्र सिंह

महबूब ख़ान

सौम्या अपराजिता

विशाल भारद्वाज

स्पाई यूनिवर्स

नवम्बर, 2023

नवम्बर, 2023

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईजिन

संकलन और संपादन:

अजय ब्रह्मतमाज

अनुक्रम

आवरण कथा

यशराज फिल्म्स का स्पाई यूनिवर्स 8

समकाल

ओएमजी (ओ माय गॉड) 2 14

संजीव चंदन

परस्पर

शाहिद की प्रशंसा में हंसल मेहता को लिखा अविनाश दास का पत्र 18

ताकि सनद रहे

69वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के विजेताओं की लिस्ट 24

गान ज्ञान

"काहे को दुनिया बनाई, तूने काहे को दुनिया बनाई" 27

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

दिग्गज दृष्टि

हमारी फिल्मों की गुणवत्ता 36

महबूब खान

अमेरिकी फिल्म

द प्रिंस ऑफ़ टाइड्स (1991) 40

सूर्यन मौर्या

पाकिस्तानी फिल्म

जिंदगी तमाशा 45

रश्मि रविजा

पुस्तकांश

फिल्में देखना जरूरी काम है 51

रवि शेखर

क्लासिक फिल्म

जोगन : छोटे से कैनवास पर हिमालय जैसी पेंटिंग 58

आनंद भारती

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित

देविका रानी 70

सौम्या अपराजिता

चरित्रांकन

राकेश चतुर्वेदी ओम 82

समकाल

थ्री ऑफ़ अस 91

दिनेश श्रीनेत

समकाल

घूमर 96

राकेश त्यागी

निर्देशक की बात

साढ़े सात फेरे 106

ईशान त्रिवेदी

प्रयास

मेरी पहली फिल्म 110

रघुवेन्द्र सिंह

विस्तृत बातचीत

इंसानी दिमाग का अंधेरा लुभाता है मुझे : विशाल भारद्वाज 116

अपनी बात

सोशल मीडिया में आए उफान के बाद फिल्मों पर लेखन और टिप्पणी की बाढ़ सी आ गई है। हर दर्शक देखी गई फिल्म या सीरीज पर अपनी टिप्पणी पोस्ट जरूर करता है। हर टिप्पणी को लाइक और कमेंट मिलते हैं। कहा जाने लगा है कि अब फिल्म समीक्षकों और लेखकों की जरूरत नहीं रह गई है। कभी कुछ पेशेवर एकाग्र भाव से फिल्म पत्रकारिता और समीक्षा करते थे। फिल्म पत्रकारिता का स्वरुप और प्रभाव बदल चुका है। माना जा रहा है कि अधिकांश फिल्म समीक्षक किसी ने किसी रूप में समझौतापरस्त हो गए हैं। उनकी समीक्षा का निहितार्थ समझ में आ जता है। आम दर्शकों की धारणा झूठी नहीं है कि इन दिनों बड़ी संख्या में समीक्षाएं खरीदी और प्रायोजित की जा रही हैं। यही कारण है कि सोशल मीडिया पर व्यक्त टिप्पणियों से रिलीज हुई फिल्मों के प्रति विचार बनते हैं। सफल और लोकप्रिय फिल्म की धमक महसूस की जा सकती है। हां, वहां भी आंकड़े बढ़ा-चढ़ा कर बताए जाते हैं और यह भी बताया जाता है की बल्कि, ब्लॉक और कॉर्पोरेट बुकिंग से फिल्मों के आंकड़े बढ़ा दिए जाते हैं। आम तौर पर यह पढ़ने को मिलता है कि ऑनलाइन बुकिंग में टिकट उपलब्ध नहीं था, मगर सिनेमाघर खाली थे।

सिनेमा के वर्तमान माहौल पर फिल्मों पर गंभीर और अनुशासित बातें कम हो रही हैं। सोशल मीडिया पर कोई कुछ बेहतरीन महत्वपूर्ण लिखता भी है तो उसे

कुछ दिनों के बाद भुला दिया जाता है। सोशल मीडिया की एक अंदरुनी कमी है कि यहां लेखक निजी प्रयत्न से अपनी टिप्पणी खोज सकता है, लेकिन पाठक उस टिप्पणी तक नहीं पहुंच पाता है। एक किस्म की अराजक स्थिति है, जिसमें हर दर्शक विशेषज्ञ की तरह बातें करता है। अगर उसकी सोच के विपरीत या प्रतिकूल विचार दिखते हैं तो वह उन्हें संकेतों से बेवकूफ और मूर्ख कहने से नहीं हिचकता। पॉपुलर स्टारों की फिल्मों पर उनके प्रशंसकों के अनुकूल नहीं लिखने पर मुझे खुद भद्दी टिप्पणियां पढ़ने को मिलती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर मेरे फॉलोवर और सब्सक्राइबर अचानक गायब होने लगते हैं।

हमारी कोशिश रहेगी कि हर महीने सिनेमाहौल फिल्म ईजिन में आपको नई-पुरानी फिल्मों की समीक्षा, प्रवृत्तियों की विवेचना, संदर्भित इंटरव्यू और कुछ गंभीर लेख पढ़ने को मिलें। हिंदी सिनेमा पर लिखने वालों की संख्या कम नहीं है, लेकिन व्यवस्थित और लगातार लिखने वालों की संख्या नगण्य है। बीच-बीच में कुछ लेखक चमकते दिखाई पड़ते हैं। उनकी लंबी और विस्तृत रचनाएं पढ़ने को मिलती हैं। फिर अचानक वे गायब हो जाते हैं। हिंदी फिल्मों पर निरंतर लिखने वालों की जरूरत है। अभ्यास और प्रयास से धीरे-धीरे दृष्टि भी विकसित हो जाएगी।

इस अंक के साथ मैं आप सभी को आमंत्रित करता हूं। आप लिखें और शेयर करें। सोशल मीडिया पर कहीं कुछ रोचक पढ़ें तो बताएं। इस ईजिन में आप

और क्या एवं किन विषयों पर सामग्रियां पढ़ना चाहते हैं। आप की टिप्पणियों और प्रतिक्रियाओं से हमें राह मिलेगी। फिल्म पत्रकारिता हमेशा से गहरे संकट में रही है। हर दौर में पुरानी पीढ़ी यही कहती रही है कि अब वह बात कहां? मैं इस नॉस्टैल्जिक नकार में कतई यकीन नहीं करता। मेरा मानना है कि वर्तमान की चुनौतियां अतीत से अधिक उलझी और बड़ी होती हैं, क्योंकि उसमें आज के साथ कल भी शामिल होता है। कल जो बीत चुका है। कोई नहीं जानता कि भविष्य कैसा होगा? क्या हम सिर्फ देखने और सुनने लगेंगे या भविष्य में भी कुछ पढ़ना चाहेंगे? मेरा विश्वास है कि शब्दों की लिखित संपदा ही हमारी धरोहर बनेगी उसी के आधार पर भविष्य का निर्माण और निर्धारण होगा। एआई उसी के सहारे आगे बढ़ेगा और हमारी मदद करेगा।

अजय ब्रह्मात्मज

नवम्बर 2023

cinemahaul@gmail.com